

SHRI SHABBIR AHMAD SALARIA  
(Jammu and Kashmir): I have an important point

THE DEPUTY CHAIRMAN: No more important things. Now we shall discuss the communal situation, I think that is more important. Shri Mohammed Afzal,

CALLING ATTENTION TO A MATTER OF URGENT PUBLIC IMPORTANCE—COMMUNAL SITUATION IN THE COUNTRY—Contd.

श्री मोहम्मद अफजल उर्फ मीम अफजल (उत्तर प्रदेश) : मैडम, मैं आपकी त्वज्जह इस तरफ दिलाना चाहूंगा कि कल यहाँ इस बात की यकीनदहानी कराई गई थी कि इस ग्रहम-इन्तहाई मसले पर जब बहस होगी तो वजीरेअजम साहब खुद यहाँ मौजूद रहेंगे। वजीरेअजम आए भी और आकर थोड़ी देर के बाद उठकर चले भी गये।

ऐसा लगता है कि जैसे उन्हें इस ग्रहमतीरन मसले में कोई दिलचस्पी नहीं है और वह खास तौर से मोअजिज मेम्बरान के ख्यालात सुनना नहीं चाहते।

कल सरोज खापड़ जी ने एक मुबारक-बाद उन्हें पेश की थी कि नया साल है, उसकी मुबारकबाद दी है। चूंकि वजीरे-अजम साहब यहाँ मौजूद नहीं हैं और उनकी जो ग्रहमे-दिलचस्पी है, उसको देख कर मैं कह सकता हूँ और अपने मोअजिज लीडर अफजल जी हाऊस के जरिए उनकी एक शेर नजर करना चाहता हूँ।

“अभी जनवरी है, नया साल है, दिसम्बर में पूछेंगे, क्या हाल है।”

उपसभापति : दिसम्बर, 1991।

श्री मोहम्मद अफजल उर्फ मीम अफजल : जी।

एक माननीय सदस्य : तब तक वह रहेगे भी ?

श्री मोहम्मद अफजल उर्फ मीम अफजल : जो भी होगा, पूछ लेंगे उनका हाल। कल जब हाऊस में इस मसले पर बहस हो रही थी और हमारे एक मोअजिज मेम्बर बी० जे पी के, प्रमोद महाजन साहब बोल रहे थे तो उन्होंने एक बात कही थी कि इस हाऊस में बड़े होकर आप कुछ भी कह दीजिए लेकिन जब आप अजम में जायेंगे तो वहाँ आपको कुछ और ही देखने को मिलेगा और वहाँ लोगों के जज्बात की आपको कद्र करनी पड़ेगी। लेकिन इस हाऊस में उनकी तकरीर पर जो रिएक्शन था और मैं समझता हूँ कि यह हाऊस सिर्फ इस हाऊस को रिप्रेजेंट नहीं करता यह इस पूरे देश की जनता को रिप्रेजेंट करता है। उनकी तकरीर पर तमाम पार्टियों की तरफ से जो रिएक्शन आया उससे हमें यह अंदाजा हो गया है कि इस देश में भारतीय जनता पार्टी के मोकफ पर और कम्युनल सिचुएशन पर, उसकी सोच पर पूरे देश का क्या रिएक्शन हो सकता है, वह रिएक्शन देखकर मुझे जैसे आदमी को जो एक माइनारिटी कम्युनिटी से आया है एक यकीन सैकुलरिज्म के अन्दर और ज्यादा मजबूत हुआ है और ज्यादा बड़ा है। मैं समझता हूँ कि जब तक यह सोच रहेगी कुछ ज्यादा मायूस होने की जरूरत नहीं है। मैडम, हमारे दोस्त जो इस हाऊस के मेंबर हैं और एक सियासी जमात से जिनका तात्लुक है, एक बार मेरी उनसे गुफ्तगू हुई। उस गुफ्तगू में उन्होंने फर्माया कि मुझे यह बात कहने में कोई शर्म नहीं कि मैं आर० एस एस का बच्चा हूँ। उन्होंने फर्माया है कि आर एस एस का बच्चा हूँ। मैं इस हाऊस में उनके जज्बे की कद्र तो कर सकता हूँ लेकिन अजम मुझे ख्याल आया कि कल वह बहुत रिप्ट कर रहे थे तो मैंने कहा कि मैं भी अपना कुछ हस्तोन्सब उनको बता दूँ। मैं इस हाऊस में एलान करना चाहता हूँ कि मैं न मुस्लिम लीग का बच्चा हूँ, न मैं जमायत-ए-इस्लामी का बच्चा हूँ, न मैं जिन्हा का बच्चा हूँ, न मैं किसी

[श्री मोहम्मद अफजल उर्फ मीम अफजल]

और का बच्चा हूँ, मैं हिन्दुस्तान का बच्चा हूँ और हिन्दुस्तान के बच्चे की हैसियत से आपके सामने कुछ बातें रखना चाहता हूँ।

मैडम, जो कम्युनल सिचुएशन इस वक़्त मुल्क में है उसकी सीरियसनेस का अंदाजा आप तीन-चार बातों से लगा सकते हैं। अलीगढ़ में एक ट्रेन से 4-5 लोगों को घसीट कर बाहर निकाला गया और क़त्ल कर दिया गया। उनमें एक 12 साल का बच्चा भी था। जहाँगीर पुरी में एक घर के 13 अफ़राद को जिसमें 4-5 साल के बच्चे भी शामिल थे ज़िंदा जला दिया गया। खुरजे के अन्दर हमारी हकूमत की कार-करदगी मलाहिजा फर्माइये। यह हाइट है। खुरजे के अन्दर बहुत सारी दुकानें जली और बहुत सारे लोग मरे। दुकानें जो जली उसके अन्दर यूनिवर्सिटी मिनिस्टर जो हमारे सरवर हुसैन साहब हैं उनकी 6 दुकानें भी फूट दी गई। सारे अखबारों में छपा है। सरकार कहती है खुरजे में 5 लोग मरे। मैं आपको बताता हूँ कि सिर्फ़ एक घर के हाफिज़ मोहम्मद साविर साहब के खानदान के 10 अफ़राद को एक ही घर में क़त्ल किया गया। उनकी 70 साल की बूढ़ी माँ उम्मीदी बेगम, चचा मोहम्मद सुलेमान, चची मतीन बेगम, 16 साल की बच्ची कमर जहाँ, शाहिद 14 साल, मलका 10 साल, रानी 8 साल और शर्म की बात यह है कि डेढ़ साल का बच्चा साजिद उसको भी क़त्ल कर दिया गया। मैडम, वाराणसी और जाफ़राबाद के बीच में एक ट्रेन से सिराज अहमद नामी शक्स की फैमिली को मारा गया और उसके तीन बच्चों को ज़िंदा उठाकर ट्रेन से बाहर फेंक दिया गया। फेंकने वाले कौन थे? मैंने कंफ़र्म नहीं किया है। मैंने अपनी आँखों से नहीं देखा है लेकिन सारे अखबारों ने लिखा है कि फेंकने वाले कार सेवक थे। यह कार सेवक वह है जो मर्यादा पुरुषोत्तम राम का मंदिर दोबारा बनाने का दावा करते हैं और बच्चों को ट्रेन से उठा कर फेंकते हैं। राम ने इन्हें कभी यह नहीं सिखाया। अलीगढ़ के मेडिकल कालेज के अन्दर एक लड़का है 27 साल का जो हास्पिटल में दाखिल होने के बावजूद दो

बार खुदकशी करने की कोशिश कर चुका है। क्यों, इसलिए कि सरिये डालकर उसकी आखें फोड़ दी गयी और उसके टेस्टीकल्स को कुचल दिया गया। यह हाइट है। इसको देखकर मुझे फ़ीज का वह शेर याद आता है—

“हरेक दार पर रखते चलो सिरों के चिराग,  
जहाँ तलक भी ये जुल्म की स्याह रात चले।”

1.00 P.M.

मैडम, यह फसादात की सिद्दत है। हमारे बुजुर्ग लोग जिन्होंने सन् 47 देखा है, मैं खुशनसीब हूँ, मैंने सन् 47 नहीं देखा और इस मुल्क के पार्टिसन का मैं जिम्मेदार नहीं हूँ, इसलिए इसकी कोई सजा भी भुगतने के लिए तैयार नहीं हूँ। लोग कहते हैं और हमारे बुजुर्ग कहते हैं कि इस वक़्त मुल्क की जो हालत है, जिस तरह से लोग ट्रेन के अन्दर सफ़र करने से डरने लगे हैं, जिस तरह से लोग बसों के अन्दर सफ़र करने से डरने लगे हैं, उसको देखकर सन् 47 और 1857 याद आता है। मैडम, 1857 के खून से तो हमने अपनी जगें आजादी की पूरी कहानी लिखी थी और 1947 में जो खून बहा उससे हमने इस मुल्क का सेकुलर आइडन लिखा था, मैं इन दंगे करनेवालों से पूछना चाहता हूँ, ये फसादात करनेवालों से पूछना चाहता हूँ कि 1990 में जो खून बह रहा है इससे आप कौनसी तारीख लिखना चाहते हैं? क्या आप वहीं चाहते हैं जो 1947 में हुआ था? क्या आप इस मुल्क को एक बार फिर बांटने की साजिशें कर रहे हैं? क्या आप इस मुल्क की अकलियत को इस बात के लिए मजबूर नहीं कर रहे हैं कि वह पिटते-पिटते हाथ में हथियार लेकर खड़ी हो जाय और हर इलाके को पंजाब और कश्मीर बना दे? क्या चाहते हैं?

मैडम, ये फसादात की सिद्दत क्यों पैदा हुई, यह एक बड़ा अहम सवाल है। कल यहाँ ऑडियो कैसेट और वीडियो कैसेट की बात हो रही थी। मुझे लगता है कि पहले फिरकापरस्ती का सफ़र रथ पर शुरू हुआ था और अब नया सफ़र शुरू हुआ है। वह तो सोमनाथ से शुरू हुआ था। हैरत की बात यह है कि किसी मुअज्जिज मेबर ने इस पर

तवज्जह नही फरमायी। साबिक वजीरे आजम मोरारजी देसाई ने एक अखबार को इटरव्यू देते हुए बंबई में कहा है कि "मैंने आडवाणी साहब को रख यात्रा निकालने की सोमनाथ ट्रस्ट मंदिर के सदर की हैसियत से इजाजत नहीं दी थी। इसलिए यह रख यात्रा मंदिर के बाहर से शुरू हुई थी। मैंने यह भी कह दिया था कि सोमनाथ मंदिर का कोई एम्पलायी आडवाणी साहब के गले में हार न डाले। इसलिए कि यदि ऐसा किया गया तो इस रख यात्रा को रिलीजियस सेंसिटिविटी हासिल हो जाएगी।" यह बड़ी अहम बात है, नोट करने की। गोया, इस रख यात्रा को सोमनाथ मंदिर का आशीर्वाद हासिल नहीं था। उन्होंने यह भी कहा कि, "मेरी समझ में नहीं आता कि ये मस्जिद तोड़ने जा रहे हैं। हमारे यहां तो सोमनाथ मंदिर के अहाते के अन्दर एक मस्जिद है और वहां वक्फ की कुछ जमीनें भी मौजूद हैं। वहां वक्फ पर मौलवी साहब अज्ञान देते हैं। हम वक्फ पर अपना घटा बजाते हैं। हमारा तो कभी झगडा नहीं हुआ।" शर्म आनी चाहिए उन लोगों को जो मंदिर मस्जिद के नाम पर इस मुल्क के एक अकलियत को आयसोलेट करना चाहते हैं ... (व्यवधान) ... नाम बताने की जरूरत नहीं है। सारा हाउस नहीं, पूरा मुल्क अच्छी तरह से जानता है।

मैंडम, मैं तवज्जह दिला रहा था कि फसाद त में इतनी सिद्ध क्यों पैदा हुई? मैंडम, फसादात पहले भी होते थे और फसादा त आज भी होते हैं। हम लोग इसके आदी हो गए हैं। लेकिन जो सिद्ध जो नफरत का जहर इस बार घुला है वह इसके पहले 40-45 साल में कभी नहीं घुला। पी० ए० सी० का सवाल आया था। कल महाजन साहब ने कहा कि हम पी० ए० सी० को डिफेंड नहीं कर रहे हैं। मैं भी पी० ए० सी० की हिमायत करने के लिए तैयार हूँ। लेकिन पी० ए० सी० जो कुछ कर रही है, पी० ए० सी० ने जो कुछ किया है क्या उसके बाद कोई भी इसमें कोई अकालाती कूबत पी० ए० सी० के उन कारनामों की खड़े होकर वकालत कर सकता है? लेकिन हमारे इस हाउस के एक मुअज्जिज मेंबर हैं, ये 9 दिसम्बर के पांचजन्य के अन्दर एक रिपोर्ट छपी है, आर० एस० एस० का तर्जुमा

है ये अखबार, उसने लिखा है कि राज्य सभा के मेंबर जनाब जे० के० जैन साहब ने पी० ए० सी० के 27 कमांडरो को रजिस्टर्ड कैसेट भेजे हैं और अपनी एक अपील भेजी है, जिसमें उन्होंने लिखा है कि गालिबन, जैन साहब रिएक्ट करने की जरूरत नहीं है, हो सकता है और अगर यह गलत हो तो आप जरूर डिनाई कीजिएगा, लेकिन यह आर० एस० एस० के अखबार में छपा है। मैं बताना चाहता हूँ। इस हाउस को कि ... (व्यवधान) ...

डा० जिनेंद्र कुमार जैन (मध्य प्रदेश): मेरा नाम लेकर बात कही जा रही है ...

THE DEPUTY CHAIRMAN: He wants to deny. Mr. Mohammed Afzal, please wait a minute. Maybe, he wants to react. Do you want to react, Dr. J. K. Jain?

DR. JINENDRA KUMAR JAIN: Yes; the honourable Member was associating...

श्री मोहम्मद उर्फ मोम अक़ल पूरी बात सुन लीजिए। उसमें यह कहा गया है कि अफगानिस्तान और श्रीलंका से कुछ टेररिस्ट आकर के हिन्दुस्तानी मुसलमानों के घर में छिप गए हैं और फसाद करना चाहते हैं। ... (व्यवधान) ...

THE DEPUTY CHAIRMAN: Please wait a minute. He wants to react.

SHRI SANGH PRIYA GAUTAM (Uttar Pradesh): He must react how to prevent communal riots.

DR. JINENDRA KUMAR JAIN: The honourable Member is associating my name with some news item. I do not know what he is trying to say. I make a statement in this House I have not sent a single cassette to any PAC person in any manner. That is one. There are many cassettes going around. But my organisation is associated with the production of only one video cassette. The title of the video cassette is

"प्राण जाह पर वचन न जाए"

I make a solemn statement in this House. Not a word in the cassette is against anybody, neither against Muslims nor against

[Dr Jinendra Kumar Jain]

any sector community. I make an offer to the honourable Members of this House that they must see that cassette and if they find anything objectionable in that (Interruptions)

THE DEPUTY CHAIRMAN: Please let him say what he wants.

डा० रत्नाकर पाण्डेय (उत्तर प्रदेश) : मैडम, यह सदन कैसेट के प्रचार करने का साधन मत बनने दीजिए। अहलुवालिया साहब इसको छेड़कर जिस तरह से प्रचार कर रहे हैं, लगता है कि वे इस कैसेट के एजेंट हैं। ये "प्राण जाए पर वचन न जाए" इसका विज्ञापन कर रहे हैं इस सदन के माध्यम से 85 करोड़ लोगों के बीच में।

श्री मोहम्मद उर्फ मीम अफजल: क्योंकि इन्होंने डिनार्ड कर दिया है तो मैं जैन साहब से दरखास्त करूंगा कि चूँकि यह आर. एस. एस. के तर्जुमान अखबार के अन्दर छपा है, इसलिए उनको अपना डिनार्ड उस अखबार को भेजना चाहिए था।

उपसभापति: अखबार का नाम?

डा० जिनेन्द्र कुमार जैन: मुझे अखबार का नाम बताया जाए।

श्री मोहम्मद उर्फ मीम अफजल: "पंचजन्य"।

डा० जिनेन्द्र कुमार जैन: मैं "पंचजन्य" नहीं पढ़ता हूँ।

श्री सुरेन्द्र जीत सिंह अहलुवालिया (बिहार): यह "पंचजन्य" नहीं पढ़ते। आर० एस० एस० के सदस्य हैं, "पंचजन्य" नहीं पढ़ते। ... (अवधान) ...

उपसभापति: अहलुवालिया साहब, बैठ जाइए। इन्होंने डिनार्ड कर दिया, बात खत्म हो गई।

श्री मोहम्मद उर्फ मीम अफजल: मैडम, उद्दयन शर्मा साहब की "संडे ग्राब्जर्वर" में एक रिपोर्ट छपी है। वैसे तो इस वक्त हिन्दुस्तान में हर अखबार बहुत सारी खबरें छापता है, अगर पढ़े तो दिल डरता है कि आज पता नहीं कौन सी खबर छपी होगी। उसमें उन्होंने आगरा के एक एम. एल. ए. को क्वोट किया है जिसमें उन्होंने कहा है कि "हमें गांव-गांव में मुसलमानों को देखना है"।

जो नारे लगते रहे हैं, वह बताने की जरूरत नहीं। एक बड़ा दिलचस्प नारा है कि "मुसलमानों के लिए पाकिस्तान या कबिस्तान"। पाकिस्तान तो हम जाने वाले हैं नहीं और खास तौर से जो नई जनरेशन है, उसके बारे में आपको बता दूँ कि हम पाकिस्तान बनाने के न जिम्मेदार हैं और न उसकी सजा भुगतने के लिए तैयार हैं। न बाबर ने जो कुजूर किया था उसके जिम्मेदार हैं, न उसकी सजा भुगतने के लिए तैयार हैं। हम आजाद हिन्दुस्तान में पैदा हुए हैं और बाबर के कानून से या किसी और राजा के कानून से गवर्न नहीं होते हैं बल्कि इस मुल्क के आजाद सैक्यूलर डेमोक्रेटिक आइडल्स से गवर्न होते हैं। वह कानून जो कहेंगा, हम करने के लिए तैयार हैं। मैं अपना प्वाइंट आफ व्यू रखना चाहता हूँ कि इस देश के सामने जो लोग हिन्दू फिरकापरस्ती को गाली देते हैं, उसके साथ फैशन के तौर पर मुस्लिम फिरकापरस्ती का भी नाम लेते हैं। जब वह मस्जिद की बात करते हैं और मंदिर की बात करते हैं तो वह मुसलमानों को भी एक तरह से गाली देते हैं कि यह मस्जिद की जो पालिटिक्स कर रहे हैं, यह सब गलत कर रहे हैं।

मैं आपको कहता हूँ कि मैं बाबरी मस्जिद एक्शन कमेटी का सदस्य नहीं हूँ और न उसका बनना चाहता हूँ। एक आजाद हिन्दुस्तान की हैसियत से, एक जर्नलिस्ट की हैसियत से, एक मैम्बर आफ पार्लियामेंट की हैसियत से अगर सच्चाई उसमें है तो उसके साथ हूँ, मुझे एक्शन कमेटी में जाने की जरूरत नहीं है। मैं यह कहता हूँ कि इस मुल्क में हिन्दू

और मुसलमान बड़े और छोटे भाई की तरह से हैं। झगड़ा दो भाइयों में भी होता है घर में, दीवार भी खँच जाती है। एक दीवार आधा खिंच चुके है। लेकिन इस झगड़े को बढ़ाकर एक नयी दीवार खड़ी करने की कोशिश मत कीजिए। मैं कहता हूँ हिन्दुस्तान का कोई मुसलमान राम के खिलाफ नहीं है, राम मंदिर के खिलाफ नहीं है क्यों नहीं हैं यह भी सुन लीजिए मजहब हमारा क्या कहता है इस सिलसिले में। किसी भी मजहब के प्यारों को किसी भी मजहब की बाइबलत शक्तियत को बुरा कहना इस्लाम में बुरा नहीं गुनाह है और यह गुनाह हम कभी नहीं करेंगे। हम राम की उतनी ही इज्जत करते हैं जितनी रहीम की करते हैं। लेकिन माफ कीजिये और मैं यह भी कहता हूँ कि हमें यह पूछने का कोई हक नहीं है कि राम पैदा हुये थे या रामायण ठीक थी या नहीं थी? यह आपका बिलीफ है हमारी आंखों पर सर आंखों पर। हम आपके बिलीफ की कद्र करते है, हम आपके बिलीफ की इज्जत करते है, हमें आपकी आस्था को सलाम करते हैं, नमस्कार करते हैं। लेकिन जब आपकी आस्था किसी दूसरी आस्था से टकरायेगी तो इस मुल्क में कोई तो फैसला करेगा। कौन है वह फैसला कराने वाला? मेज पर आप बैठते हैं, बातचीत करते हैं 6 तारीख को कार सेवक एलान करते, और जब बातचीत का एक माहौल बनने लगता है तो 7 तारीख की अलीगढ़ में दंगे करा देते है और उसके बाद बने बनाये माहौल को तबाह और बरबाद कर देते है। यह वह मिलिटेंट सेक्शन है विश्व हिन्दु परिषद का जिसने इस मुल्क में फसादात शुरू कराये 7 तारीख से ताकि विश्व हिंदु परिषद और बाबरी मस्जिद एक्शन कमेटी के दरम्यान जो गुफतगू हो रही वह नाकाम हो जाये। उसके बाद कागजातों का आदान-प्रदान हुआ। मैं और कुछ नहीं कहना चाहता मोर्राज्जिज होम मिनिस्टर साहब यहाँ बैठे हुये है। यह इस बात के गवाह हैं, इनकी फाईले इस बात की गवाह हैं और इनकी फाईले गवाह हो या न हो इनका दिल इस बात की गवाही देगा और बतायेगा कि कौन जायज है और कौन नाजायज है? हमने पूरा कोआप्रेशन

दिया आज तक। जब हम से अजबबार वालों ने पूछा कि बाबरी मस्जिद एक्शन कमेटी के आपने कागजात दे दिये हैं और अपना सबूत पेश कर दिया है और विश्व हिन्दु परिषद वालो ने अपने कागजात में आपकी क्या दिया है? तो हमने यही जवाब दिया कि इसका फैसला दस तारीख को करेंगे जब बातचीत की बेज पर बैठेंगे लेकिन यह विश्व हिन्दु परिषद वह है जिसने तीन चीफ मिनिस्टर्स चैरो सिद्ध शेखावत साहब, सरद पवार साहब और मुलायम सिंह यादव साहब और यहाँ सुबोध का त सहाय, होम मिनिस्टर बैठे हुये हैं जो चारों हजरात आर्बिट्रेटर है, इन लोगों से बैर पूछे इन लोगों की बगैर कांफिडेंस में लिये हुये यह ऐलान कर दिया कि हमने बाबरी मस्जिद के कागजात को रिजेक्ट कर दिया है। वजह? वजह यह है कि वह तो सब लीगल कागजात है, हिस्टोरिकल कोई प्रूफ नहीं है। मैं आपके पूछना चाहता हूँ कि 1885 के अंदर अगर किसी कोर्ट ने कोई फैसला कर दिया है और उस फैसले पर अमल भी हुआ है तो क्या उसकी सिर्फ लीगल हैसियत है, क्या उसकी कोई हिस्टोरिकल इपोटेन्ट नहीं है? आप फरमाते है कि उसकी कोई हिस्टोरिकल इम्पोटेन्ट नहीं है। जो किताबें होंगी प्रायदेवही हिस्टोरिकल इपोटेन्ट होगी। यह रबैया है दो फरीके का। मैं इस सदन के जमीर से सवाल करना चाहता हूँ कि आस्था की हम इज्जत कर सकते है लेकिन हम हिंदू की कैसे इज्जत कर सकते है? विश्व का जो माहौल बना हुआ है क्या उससे लड़ा जा सकता है? एक कहावत है उर्दू के अंदर दिल्ली में बहुत लोग कहते हैं -“हमारा टेसू वही अडा, खाने को मागे दही बडा” यह वही रबैया है कि नही साहब आप कुछ भी कहते रहिये, बातचीत का नतीजा कुछ भी निकले हम वही बात कहेंगे जो पहले कहते थे और उससे एक इंच पीछे नहीं हटेंगे। आप एक इंच पीछे नहीं हटेंगे। मैं इस सदन के सामने एक हिंदुस्तानी की हैसियत से, एक हिन्दुस्तानी मुसलमान की हैसियत से बाबरी मस्जिद का केस रखना चाहता हूँ मैं सच कहता हूँ मैं मजहबी आदमी नहीं हूँ मैं पांचो वक्त की नमाज नहीं पढ़ता, मैं बहुत मुनहगार हूँ। लेकिन मैं इज्जत पसंद की हैसियत से आपसे पूछना

[श्री मोहम्मद अफजल उर्फ मीम अफजल]

चाहता हूँ कि इस्लाम में इस बात की इजाजत नहीं है कि मस्जिद को हटाया जा सके या मस्जिद को तोड़ा जा सके यह हमारी आस्था है। आपकी आस्था यह है कि राम का मंदिर वही बनेगा जहाँ गर्भ गृह है और गर्भ गृह कहाँ है उस मंजर के ऊपर जहाँ मोअज्जिन खड़े हो करके जुम्मे का खतवा देता है और नमाज पढ़ता है। कितना जबरदस्त टकराव है? मैं आपकी आस्था की कद्र करता हूँ लेकिन मैं आपसे पूछना चाहता हूँ कि आपकी आस्था अचानक चार साल में कैसे जाग गई? 1949 में जब मंदिर मस्जिद के अन्दर मूर्तियाँ रखी गयी उसकी एफ.आई.आर दर्ज है उसकी तरफ से यू.पी. गवर्नमेंट ने पूरा केस लड़ा है।

उस वक्त आपकी आस्था कहाँ थी?

1977 में जब आप जनता पार्टी के अंदर शामिल हुए, यह मैं बी.जे.पी. से बड़े अदब से कहूँगा उस समय आपने इस राम जन्मभूमि के मसले को क्यों नहीं रखा? यह चुनाव चिह्न लगाकर, रथ यात्रा करके अपनी आस्था की साबित करना चाहते हैं, क्या इस मुल्क में रहने वाले हिंदु इस बात से कन्विस होंगे कि आपकी आस्था सिर्फ 4 साल में जगी है? इससे पहले आपकी आस्था कहाँ थी मैं पूछना चाहता हूँ बड़े अदब से सवाल करना चाहता हूँ बड़ा भाई समझकर आपसे बात करना चाहत हूँ देखिए आप जिस किस्म का माहौल पैदा कर रहे हैं, आप कहते हैं कि अखिलयती के साथ अपीजमेंट हो रहा है। मुझे शर्म आती है यह बात कहते हुए कि हम 40 सालों से रो रहे कि फसादात में हमारा खून, हमारी जायदादें, हमारी इमलात लुट जाती है। हम जल्ला रहे हैं, हिन्दुस्तान की प्रेस इस बात की गवाह है। मैं मुबारकबाद देता हूँ नेशनल प्रेस को, जिसने बड़ी ईमानदारी के साथ इन 40 सालों में इस मुल्क की हकीकतों को खुलकर अवाम के समाने रखा और आज भी रख रही है।

हमारा परसेंटेज नौकरियों में 15 और 20 फीसदी से डेढ़ फीसदी रह

गया, कहीं एक फीसदी है, कहीं जीरो है। आप कहते हैं कि धर्म की बात न करिए, मैं आप से पूछना हूँ कि पी.ए.सी. के अंदर आपने कितने मुसलमानों को रखा? कितने मुसमानों को आपने पुलिस के अंदर रखा? कितने मुसलमानों को आपने फौज में रखा, जरा बताइए। सेट्रल सेक्रेटेरिएट का रिकार्ड उठाकर देख लीजिए और सब बातों को छोड़ दीजिए, इस मुअज्जित पार्लियामेंट का स्टाफ देख लीजिए और बताए कि कितने मुसलमानों को आपने रखा है।

हमको माथी तौर पर फसादात करके तबाह किया जा रहा है। सरकारी तौर पर इटरव्यू में बैठे हुए लोग हमसे आगे रहते हैं। हमारा सावसेज में रिकार्ड कम है और इनका ख्याल है कि मुसलमानों के साथ अपीजमेंट किया जा रहा है। भाई किस अपीजमेंट की बात कर रहे हैं आप? क्या आप उस अपीजमेंट की बात कर रहे हैं कि हर इलेक्शन से पहले उर्दू का नारा लगा दिया कांग्रेस ने, हर इलेक्शन से पहले यह कह दिया कि सब मुसलमानों को हम बराबरी से रिप्रेजेंटेशन देंगे। मुझे शिकायत सारी पार्टियों से है। माफ कीजिएगा, अपनी पार्टी से भी है और इसी हाऊस के अंदर खड़े होकर मैंने यह कहा है और जब तक जुबान है, कहता रहूँगा।

मैं आपसे एक बात कहना चाहता हूँ कि अपीजमेंट का होवा खड़ा करने से ग्राम आदमी, इस देश के 70 फीसदी हिंदु और मुसलमान पढ़े लिखे नहीं हैं, बहक जाते हैं। उनके दिल में नफरत पैदा की जा रही है लेकिन इस नफरत का नतीजा क्या निकलेगा, मैं सिर्फ आपसे यह पूछना चाहता हूँ। मेरा ख्याल यह है कि इसका नतीजा आहिस्ता-आहिस्ता जाहिर होने लगा है। मुझे इतिला मिली है कि कहीं किसी एक फसाद में कुछ मुसलमान लड़कों ने पुलिस के लोगो पर हमला कर दिया। मुझे नहीं मालूम कि यह ठीक है या गलत है। गृह मंत्री जी यहाँ बैठे हैं, उनको पता होगा। मैं आपसे यह कहना चाहता हूँ कि ऐसा क्यों हुआ

मैं उस हमले की किसी हालत में भी, मर भी जाऊंगा तब भी, हिंसायत नहीं करूंगा लेकिन यह जरूर पूछना चाहूंगा कि आप किसी को मारते रहेंगे तो कब तक वह बरदाश्त करेगा, कब तक वह सुनता रहेगा।

महाजन साहब पैसे का हिसाब रखते हैं, वह बता रहे थे कि हम तो सूद का हिसाब रखते हैं। महाजन साहब अभी यहाँ तशरीफ नहीं रखते हैं। मैं उनसे पूछना चाहता हूँ कि लाशों का हिसाब क्यों नहीं रखते? हमारे जे.के. जैन साहब इस हाउस के म्यूजिजिंग मेबर हैं। मैं शुरू में इनकी बातों से बड़ा मुतासिर हुआ और मुझे लगा कि इनके अंदर जज्बा है हिन्दू-मुसलमान एकता को बढ़ाने का लेकिन ये गलती से आर.एस.एस. के आदमी हैं ... (व्यवधान)

DR. JINENDRA KUMAR JAIN: The hon. Member is referring to my name. If there is any problem, I will be able to help him.

SHRI. MOHAMMAD AFZAL alias MEEM AFZAL Mr. Jain, I want your help. I really want your help

मैं आपसे कहूंगा कि आपने एक कैसेट बनाया है, वह कैसेट मैंने भी देखा है। आप यकीन जानिए जब मैंने उसमें दो भाइयों की लाशें देखी तो मेरा खून खौल गया और मेरे सामने इस मुल्क में 1947 के बाद की सैकड़ों, हजारों लाशें घूम गईं जिनका पी.ए.सी. ने यह हशर किया है। लेकिन मैं पूछना चाहता हूँ कि आपने अयोध्या की लाशों के कैसेट बना लिए और उनको करेसी में कनवर्ट कर लिया। अगर आप इस मुल्क के लिए वाकई वफादार हैं तो आप अलीगढ़ की लाशों के कैसेट बनाइए, आप खुरजा की लाशों के कैसेट बनाइए, आप मलियाना की कैसेट बनाइए ... (व्यवधान)

DR. JINENDRA KUMAR JAIN. Madam, may I react to this?

THE DEPUTY CHAIRMAN: Okay. React.

DR. JINENDRA KUMAR JAIN: Madam, he has said certain things I am sure. (Interruptions) Madam, the hon. Member has said that I have made a cassette on Ayodhya. He is right. But he should also know that I had also made a cassette on Mahana, he should also know that I had also made a cassette on Hashimpura, he should also know that I have the recordings of the killings in Bhagalpur, and he should also know that my team is working to make cassettes on Aligarh and Khurja. But. (Interruptions)

उपसभापति: अब आपकी बात पूरी हो गई, अब यह मामला खत्म हुआ ... (व्यवधान)

डा० रत्नाकर पाण्डेय: जो कैसेट बने उनके बिकने से कितने पैसे मिले? जो अयोध्या के कैसेट बने उनसे कितने पैसे मिले? ... (व्यवधान)

THE DEPUTY CHAIRMAN. Now we are not keeping a record of the account of this. That is the job for the Income-tax, not for us.

DR. JINENDRA KUMAR JAIN: Madam, let me answer.

THE DEPUTY CHAIRMAN. Don't answer. You answer it to the Income-tax, not to this House. Please sit down. (Interruptions)

DR. JINENDRA KUMAR JAIN: Madam, the hon. Member has made a very important remark. He is a very responsible, experienced Member. If it was a matter concerning with income-tax, this great man would not have raised the issue here. He thinks that somebody is trying to make money at the cost of the national interest. Therefore, he has expressed this. Do I not have the responsibility, Madam, to tell my senior colleague that he is not fully acquainted with the facts? He should know that maybe 10 or 15 days back, the studio of mine where an investment of crores of rupees has been put in out of the borrowed money from the commercial banks has...

THE DEPUTY CHAIRMAN: Mr. Jain, may I remind you that your name is before me and you are going to make a speech? I will give you two more minutes to add to whatever you speak. I will give you two more minutes to speak about it and you can satisfy him.

श्री मोहम्मद अफजल उर्फ मीम अफजल :  
महोदया, मैं इनका शुक्रगुजार हूँ। मलियाना का कैसेट इन्होंने इसलिए बनाया था कि उस वक्त कांग्रेस की सरकार थी और अयोध्या का कैसेट इन्होंने इसलिए बनाया कि इनकी वी०पी० सिंह के साथ ठन गई। (व्यवधान)

THE DEPUTY CHAIRMAN: Mr. Afzal, will you please conclude your speech?

श्री मोहम्मद अफजल उर्फ मीम अफजल :  
मैं कनक्लूड कर रहा हूँ। महोदया, जहाँ मैं एक तरफ इन फंसादात के लिए विश्व हिन्दू परिषद् की ओर इशारा कर रहा हूँ, वहीं मैं इसके लिए इस हुकूमत को भी बराबर का जिम्मेदार मानता हूँ। मैं आपसे एक बात अर्थ करना चाहता हूँ कि हुकूमत का काम लोगों को सैम्यूरिटी देना है। किसी ने कल मञ्जाम मे कहा कि सुबोध कात जी पहले भी थे और आज भी है। मैं यह बात समझ सकता हूँ और मुझे पुरा यकीन है कि अगर सुबोध कात जी जैसे मिनिस्टर जिम्मेदारी से अपना काम करे तो शायद कुछ मसायल हल हो सकते हैं। मैंने इनको इस बात के लिए कोशिश करते हुए देखा है हालांकि यह अलग बात है कि ये इन कोशिशों में नाकाम हुए हैं। जब अलीगढ़ में दंगा हुआ तो मैं इनके घर गया और मैंने इनके घर पर ही धरना दिया। ये मुझे मोहब्बत से उठाकर ले गए। मेरे सामने इन्होंने जो कुछ भी यू पी सरकार को कह सकते थे कहा और जो कुछ इतजाम फोर्स भेजने के लिए कर सकते थे इन्होंने किया। मैं उनका शुक्रगुजार हूँ लेकिन मैं इस बात का गवाह हूँ, मैंने इनकी बेबसी अपनी आँखों से देखी है। जब इस मुल्क में वजीरे आजम और वजीरे खारजा भी फिरकावाराना वारदाते

फैलाने वालों के आगे बेबसी महसूस करने लगे तो ज़रा मुझे बताइए कि वे लोग जिनके साथ जुल्म हो रहे हैं वह क्या करेंगे? वे लोग पहले मायूस हुए थे फिर उनके अंदर बेजारी बढ़ी। मैं आपसे निवेदन यह करना चाहता हूँ, इस बात को वजीरे दाखिला खासतौर से नोट कर लें कि अब उनके अंदर बग़ावत का जजबा पैदा हो रहा है। वजीरे आजम साहब जो यहाँ मौजूद नहीं हैं, जिन्हें दिलचस्पी नहीं है शायद इस मसले पर उनके तीन दिन से बयानात की झड़ी लगी हुई है। ऐसा लग रहा है जैसे पंजाब का मसला हल कर लिया गया है। चिराम तल्ले अंधेरा बाली बात है। पंजाब का मसला हल करने के लिए बयानात दे रहे हैं। चिराम के तले न जाने कितने कश्मीर, न जाने कितने पंजाब बुलबुला रहे हैं। उन्हें इस बात का पता नहीं है कि जब यह फन फैला कर खड़े हो जायेंगे तब वह शायद इस तरफ भागेगे। वजीरे दाखिला साहब यहाँ मौजूद हैं। मैं समझता हूँ इस मौजिज़ हाऊस के अंदर वह बयान दे क्योंकि मसला बहुत बड़ा है बाबरी मस्जिद और राम जन्म भूमि के मसले से। मैं किसी की आस्था के खिलाफ नहीं हूँ। लेकिन वजीरे दाखिला को यह बात बतानी होगी कि इस मुल्क में ज़िद चलेगी या आस्था चलेगी, ज़िद चलेगी या कानून चलेगा, ज़िद चलेगी या इन्साफ चलेगा। वह मुझे बताये कि बाबरी मस्जिद को तोड़कर मन्दिर बनाने की इजाजत दी जायेगी या नहीं? वह इस हाऊस में बयान दे इसलिए कि जब इस मुल्क का वजीरे आजम अफथ लेने के दूसरे दिन एक फिरकापरस्त पार्टी के सदर के घर मिलने के लिए, सलाम करने के लिए जाता है और मुब्तलिफ फिरकापरस्त लीडर के घर पर विश्व हिन्दू परिषद् के लोगो से मिलता है तो मुझे उस वजीरे आजम की सोशलिस्ट छवि, समाजवादी छवि खत्म होती नजर आ रही है। लोगो का काफिडेंस उसमें खत्म हो जाता है। मैं आपसे कहना चाहता हूँ अगर बोट की सिसायत में 88 सीटों के दम पर यहाँ हर कोई शख्स अपने आगे किसी को झुका सकता है तो आप समझ लीजिए इस मुल्क में चाहे

लोगों की पार्लियामेंट के अंदर कमी हो लेकिन बाहर कोई कमी नहीं है अगर मुकाने का रवैया शुरू हो गया तो इस मुल्क के लिए एक नुकसानदेह होगा।

मैं आखिर में कहना चाहता हूँ खास-तौर से उन हजारों से जो हिन्दुस्तान के मुसलमानों को बहरे-बगाल, पाकिस्तान और कश्मिर दिखाना चाहते हैं। मैं उनको कहना चाहता हूँ कि हम न पाकिस्तान जायेंगे न कश्मिर जायेंगे। अगर आपने बीस करोड़ मुसलमानों को कश्मिर भेजने की कोशिश की तो दो-दो गज जमीन चाहिए और इसके लिए एक नया पाकिस्तान देना पड़ेगा उनके कश्मिर के लिए। इस बात को आप समझ लीजिए। इसलिए बेहतर यह है कि भाई-चारे का माहौल पैदा करने के लिए मैं आप से दबाव करना हूँ। हाथ जोड़कर निवेदन करता हूँ कि इसको डर मत समझिये। मैं इस मुल्क की भलाई के लिए कह रहा हूँ। नफरत का माहौल खत्म कर दीजिए। दोस्ती में जो फायदा है वह दुश्मनी में नहीं है। उसमें इस मुल्क का नुकसान होगा। इस मुल्क के हिन्दुओं का या मुसलमानों का नुकसान नहीं होगा अगर इस मुल्क में हिन्दू मरेगा या इस इस मुल्क में मुसलमान मरेगा तो इस मुल्क का नुकसान होगा और इतना भयानक नुकसान होगा कि जो न आपसे उठाया जायेगा और न किसी और में। (व्यवधान)

श्री कैलाश नारायण सारंग (मध्य प्रदेश) आप धमकी मत दीजिए। (व्यवधान)

श्री मोहनदास अफजल उर्फ मोम अफजल मैं धमकी नहीं दे रहा हूँ। मैं खासतौर से नई जनरेशन की तरफ ध्यान दिला रहा हूँ। (व्यवधान) मेरा धमकी देने का स्टाइल कभी नहीं रहा है। आगे उठाकर देख लीजिए चार साल की तारीख का रिकार्ड। हमारी कम्युनिटी में से किसी ने भी धमकी दी उसका क्या हुआ आप देख लीजिए। आज उसको अबाम नहीं पूछता।

PROF SOURENDRA BHATTACHARJEE (West Bengal): What is he saying? You see the records

THE DEPUTY CHAIRMAN I will go through the record

श्री मोहनदास अफजल उर्फ मोम अफजल : जिस शब्द ने धमकी दी उसका हश्र आपके सामने है। हम धमकी देने वाले लोग नहीं हैं। लेकिन आप यह न समझिये कि हम बेहद कमजोर हैं। (व्यवधान)

श्री जगदीश प्रसाद माथुर (उत्तर प्रदेश) अफजल भाई जोश में आकर गलत बात कह गये। मैं यह मानता हूँ कि उनकी यह मशा नहीं थी। उनको बाजे कर देना चाहिए।

उपसभापति : उन्होंने क्या कहा ?

श्री जगदीश प्रसाद माथुर : वही बता रहा हूँ। उन्होंने कहा कि उनको दो गज जमीन चाहिए और इसके लिए आपको दूसरा पाकिस्तान देना पड़ेगा। मैं जानता हूँ वह दूसरा पाकिस्तान नहीं चाहते लेकिन जो गलतफहमी पैदा हो गई उसको उनको दूर कर देना चाहिए।

श्री मोहनदास अफजल उर्फ मोम अफजल : मैं कश्मिर के लिए कह रहा हूँ ... (व्यवधान)

श्री जगदीश प्रसाद माथुर : पाकिस्तान क्यों कहते हो ?

श्री मोहनदास अफजल उर्फ मोम अफजल : आप इतने खोफजदा क्यों हो ? मेरी समझ में नहीं आता कि इस मुल्क के अन्दर लाशों के ढेर लगते हुए आप खोफजदा नहीं होते, यहाँ मेरे बोलने से आप खोफजदा ही गये ... (व्यवधान)

श्री जगदीश प्रसाद माथुर : खोफजदा इसलिए हूँ कि मेरा एतराज पाकिस्तान पर है। मेरे दोस्त ने जब यह बात कही तो ऐसा लगता है कि उनके अन्दर कहीं पाकिस्तान छिपा हुआ है ... (व्यवधान)

श्री मोहम्मद अफजल उर्फ मीम अफजल : मैं उस पाकिस्तान को भी गलत समझता हूँ और इस पाकिस्तान को भी गलत समझ रहा हूँ। यह बात मैं आपसे कह रहा हूँ। लेकिन आप लोगों को मजबूर मत करिये।

श्री जगदीश प्रसाद माथुर : लेकिन खुदा के लिए पाकिस्तान मत कहिये।

श्री जिनेन्द्र कुमार जन : आप ऐसा क्यों बोलते रहते हैं, आपकी क्या मजबूरी है?

श्री मोहम्मद अफजल उर्फ मीम अफजल : हमारी कोई मजबूरी नहीं है, मजबूरी आपकी है, सियासी मजबूरी है, वोट की मजबूरी है ... (व्यवधान)

THE DEPUTY CHAIRMAN. The House is going to be adjourned now.

श्री जगदीश प्रसाद माथुर : मेडम, ऐ स लगता है कि उनके जज्बात में कहीं न क पाकिस्तान छिपा हुआ है।

श्री मोहम्मद अफजल उर्फ मीम अफजल : नहीं छिपा हुआ है।

श्री जगदीश प्रसाद माथुर : तो मना कर बीजिये।

श्री मोहम्मद अफजल उर्फ मीम अफजल : मैंने कह दिया है।

श्री उपसभापति : उन्होंने कह दिया है, अब आप बंद कीजिये।

श्री मोहम्मद अफजल उर्फ मीम अफजल : अगर इस मुल्क के मुसलमानों को कोई शक्स कब्रिस्तान भेजना चाहता है तो हमारा रिएक्शन क्या होगा, इसको समझ लीजिये। आप लोग सदन के अन्दर बहुत अच्छी तकरीरें करते हैं। अबरार साहब ने बिल्कुल सही कहा कि आप लोग सदन में बहुत अच्छी तकरीरें करते हैं, लेकिन क्या

सदन में आप वही तकरीरें करते हैं जो रथ के सफर में कर रहे थे।

श्री जिनेन्द्र कुमार जन : बिल्कुल वही ... (व्यवधान)।

It is all a documented fact.

श्री मोहम्मद अफजल उर्फ मीम अफजल : बिल्कुल नहीं कर रहे थे। जब आप तकरीरें करेंगे तो मैं उसको सुनूँगा और नोट करूँगा ... (व्यवधान)

THE DEPUTY CHAIRMAN: Now, it is over. The House is going to be adjourned.

श्री मोहम्मद अफजल उर्फ मीम अफजल : मैं हुकूमत से इस बात का मतलब करना चाहता हूँ कि इस मुल्क के अवाम को, हिन्दुओं को, मुसलमानों को, वह पूरा प्रोटेक्शन दे और बातचीत को आगे बढ़ाने की कोशिश करे और अगर बातचीत आगे नहीं बढ़ती है तो हुकूमत को समझ लेना चाहिए कि कौन लोग ज़िद पर हैं और कौन वाकई तसमाना चाहते हैं। आप उसके मुताबिक कानून को देखिये। मैं मुसलसल सुनता रहा हूँ। साहब ने एक बयान दिया और वह अखबारों में भी छपा कि इस मुल्क के मुसलमानों को पुलिस नहीं बचा सकती है, स्टेट नहीं बचा सकती है और अगर बचा सकते हैं तो हिन्दू बचा सकते हैं। क्या मतलब है इस बात का? क्या आप कांस्टिट्यूशन के खिलाफ बात नहीं कर रहे हैं ... (व्यवधान)

THE DEPUTY CHAIRMAN: Please conclude now.

श्री मोहम्मद अफजल उर्फ मीम अफजल : क्या कोई इस मुल्क में इस बात का नोटिस लेने वाला है? किसी ने क्या उनके ऊपर बगावत का मुकदमा दायर किया? क्या होम मिनिस्ट्री ने कोई एक्शन लिया? मैं अगर यह कहूँ कि जे० के० जैन साहब आपके साथ जो शोडो घूम रहा है वह आपको नहीं बचा सकता, उसमें इतनी ताकत नहीं है। इस मुल्क की हुकूमत आपको नहीं बचा सकती, बचा सकते हैं तो हम बचा सकते हैं तो क्या ज़ुर्म नहीं कर रहा हूँ? लेकिन अगर किसी पार्टी का लीडर कोई ज़ुर्म करता है तो न तो होम मिनिस्ट्री सुनते और न ही वजीरे आजम सुनते हैं।

+ [شری محمد اوسل منیر  
افضل (اتر پردیش)۔ میڈم میں  
آگلی توجہ اس طرف دلانا چاہتا ہوں  
کہ کل بیان اس بات کی یقین دہانی  
کرائی گئی تھی کہ اس اہم استہانی  
مسئلے پر جب بحث ہوگی تو وزیراعظم  
صاحب خود بیان فرمادیں گے۔

وزیراعظم آئے بھی اور آخر مقتوی  
دیر کے بعد اٹھ کر چلے بھی گئے۔  
ایسا لگتا ہے کہ جسے انہی اس  
اہم مقررے مسئلے میں کوئی دلچسپی  
ہے اور وہ خاص طور سے مغز تھمائی  
کے خیالات سامنے لیا ہے۔

کل صبح کھانسی سے جڑے ایک  
مہاراجہ بادشاہی پیش کی تھی کہ نیا  
سال ہے اس کی مبارکباد دے دیجئے۔  
تو کہ وزیراعظم صاحب بیان دے دو جنہی  
ہیں اور آج کو جو عہد دلچسپی ہے  
اسے تو دیکھ کر میں یہ کہہ سکتا ہوں اور  
جسے عہدہ لکھ کر آفت دی ہو اس کے  
ذریعے انکو ایک شعر ضرور نظر کرنا  
چاہتا ہوں۔

ابھی جنوری ہے۔ نیا سال ہے  
دشمن میں بوجھیں گے کیا حال ہے  
اب سمجھاتی: دسمبر 1991

شری محمد افضل عرف م۔ افضل:  
جی۔ ایک مغز مہر! تب تک وہ رہیں گے  
بھی۔

شری محمد افضل عرف م۔ افضل:  
جو بھی ہوئے پوچھ لیں گے انکا حال۔ کل  
جب آؤں میں اس مسئلے پر بحث  
فرمائی تھی۔ اور پھر اسے ایک مغز مہر

لجائیے۔ جی کے ہر مورد صاحب صاحب  
جل رہے تھے۔ تو اب اسے ایک بات  
کہی تھی کہ اس آؤں میں کھڑے ہو کر  
آپ کچھ بھی کہہ دیجئے لیکن جب آپ  
عوام میں جائیں گے تو وہ آؤں آپ کو کچھ  
اور ہی دیکھنے کو ملے گا اور وہ آؤں لوگوں  
کے جذبات کی آپ کو قدر کرنے پڑے گی  
لیکن اس آؤں میں آپ کی تقریر پر  
جو ری ایکشن تھا اور میں سمجھتا ہوں  
کہ یہ آؤں صرف اس آؤں کو نہیں  
پیرینڈیٹ بنیں گے تا یہ آؤں اس  
پوچھے دلش کو رہیں دیکھ کر تاراج  
آؤں تقریر پر تمام پارٹیوں کی طرف سے  
جو ری ایکشن آیا اس سے ہمیں یہ

اندازہ ہو گیا کہ اس دلش میں بھاری  
فتنا پارٹی کے مدعو پیر اور کمیونٹی سوا  
لش پیر۔ اسکی سوچ پر پوچھے دلش کا  
ری ایکشن کیا ہو سکتا ہے۔ وہ ری  
ایکشن دیکھ کر مجھے جیسے آدمی کو جواب  
ہائینڈی کیونٹی سے آیت اب کہ لیکن  
سیکولرزم کے انداز زیادہ مضبوط ہوا  
ہے۔ اور زیادہ بڑھا ہے۔ میں سمجھتا  
ہوں کہ جب تک یہ سوچ رہے گی کہ  
زیادہ مالوس ہونے کی ضرورت نہیں  
ہے۔ میڈم ہمارے دوست جو اس

آؤں کے مجھ میں اور ایک سیاسی  
جماعت کے جن کا تعلق ہے۔ ایک  
نارہیری ان سے گفتگو ہوئی۔ اس  
گفتگو میں انہوں نے فرمایا کہ مجھے یہ بات  
کہنے میں کوئی شرم نہیں کہ میں آر ایس  
ایس کا بچہ ہوں انہوں نے فرمایا کہ میں  
اس آؤں میں آئے جذبات کی قدر کر

لکھنا ہوں۔ لیکن آج مجھے خیال آیا کہ کل وہ بہت سی آئیٹ کر رہے تھے۔ وہ میں نے کہا کہ میں بھی اپنا حسب و نسب اعلیٰ بنادوں۔ میں اس غور میں اعلان کرنا چاہتا ہوں کہ میں نہ مسلم لیگ کا بچہ ہوں۔ میں مسیحیت (اسلامی) کا بچہ ہوں۔ نہ میں خلیج کا بچہ ہوں۔ نہ میں کسی اور کا بچہ ہوں میں ہندوستان کا بچہ ہوں اور ہندوستان کے بچہ کی حیثیت سے آپ کے سامنے کچھ باتیں رکھنا چاہتا ہوں۔

میں نے قریباً سب سے پہلے اس وقت ملک میں سے اسٹی سیریس میں سے اندازہ آپ تین چار باتوں سے لگا سکتے ہیں۔ علی گڑھ میں ایک ٹرن سے جا رہے ہیں۔ لوگوں کو گھسٹ کر باہر نکال دیا اور قتل کر دیا گیا۔ ان میں ایک بارہ سال کا بچہ بھی تھا۔ جہانگیر پوری میں ایک گھر کے ۱۳ افراد کو جس میں چار بارہ سال کے بچے بھی شامل تھے زندہ جلا دیا گیا۔ خورم کے اندر ہماری حکومت کی کارروائی ملاحظہ فرمائیے۔ یہ حادثہ ہے۔ خورم کے اندر بہت ساری دکانیں جلیں اور بہت سارے لوگ مارے گئے۔ دکانیں جو جلیں اس کے اندر یونین منسٹر جو پہلے سرحد عین صاحب ہیں ان کی دکانیں بھی بھونک دی گئیں۔ سارے اخباروں میں شائع ہے۔ سرکار کہتی ہے خورم میں ۵ لوگ مرے۔ میں آپ کو بتاتا ہوں صرف ایک گھر کے حافظ محمد صابر صاحب کے خاندان ۱۵ افراد کو ایک

ایک ہی گھر میں قتل کیا گیا۔ ان کی ستر سال کی لڑھی ماں امید بیگم۔ محمد سلیمان۔ چچی معین بیگم۔ ۱۶ سال کی بچی قمر جہاں۔ شاید ۱۵ سال۔ کلک ۱۵ سال رانی ۱۵ سال اور شرم کی بات یہ ہے کہ ڈیڑھ سال کا بچہ ساجد (اسکو بھی قتل کر دیا گیا۔ میڈم والی اور جعفر آباد کے بیچ میں ایک ٹرن سے سراج احمد نامی شخص کی فیملی کو مارا گیا اور اسے تین بچوں کو قتل عمر ۱۵ سال۔ ۸ سال اور ۵ سال تھی اس کا ٹرن سے ماں بھینک دیا گیا۔ بھینکنے والے کو قتل تھے۔ میں نے کفرام نہیں کیا ہے۔ میں نے اپنی آنکھوں سے نہیں دیکھا ہے۔ لیکن سارے اضلاع میں لکھا ہے کہ بھینکنے والے کا سیوک تھے۔ یہ کار سیوک وہ ہیں جو میرا پر شوخ رام کا مندر دوبارہ بنانے کا دعوہ کرتے ہیں اور بچوں کو ٹرن سے اٹھا کر بھینکتے ہیں۔ رام نے اس کی پی پی سی کیا۔ علی گڑھ کے میڈیکل کالج کے اندر ایک لڑکا ہے ۲۷ سال کا جو بھٹل میں داخل ہونے کے موجود دوبار خود کشی کرنے کی کوشش کر رہا ہے۔ گتہ کی اسلئے کہ سوئے ڈاکٹر اس کی آنکھیں بھونک دی گئیں۔ اور اسے میڈیکل کالج دیا گیا۔ یہ حالت ہے۔ اس کو دیکھ کر فیض کا وہ شعر یاد آتا ہے۔

ہر ایک دایرہ کہتے جو سروں کے چراغ  
جہاں ملک بھی یہ ظلم کی سیاہ رات تھی

برڈم۔ یہ مسادات کی صوبہ ہے۔ ہمارے  
 ہمارے نزدیک گوگ، ہیروئے سید ۷۴  
 ڈیویا ہے۔ میں خوش نصیب ہوں کہ میں  
 ۷۴ میں نہیں دیکھا اور اس ملک کے  
 پارٹیشن کا میں ذمہ دار نہیں ہوں۔ اسلئے  
 اسکی کوئی سزا بھی نہیں ملے گی تیار ہیں  
 ہوں۔ گوگ کہتے ہیں کہ اور ہمارے نزدیک  
 کہتے ہیں کہ اس وقت ملک کی جو حالت  
 ہے جس طرح سے گوگ شرین میں سفر  
 کرنے سے روکنے لگے ہیں۔ جس طرح سے  
 گوگ لبوں کے اندر سفر کرنے سے روکنے  
 لگے ہیں۔ اسکو دیکھ کر سید ۷۴ اور ۱۸۵  
 یاد آتا ہے۔ میڈم ۱۸۵ کے خون سے  
 تو ہم نے آزادی کی پوری کہانی سن لی تھی  
 اور ۱۹۴۷ میں جو خون بہا کر اس سے  
 ہم نے اس ملک کا سید لڑائیں لکھا تھا  
 اس میں ان گنت کرنے والوں سے پوچھنا  
 چاہتا ہوں کہ ۱۹۹۰ میں جو خون بہا  
 رہا ہے اس سے آپ لوں سے تارخ لکھا  
 جانتے ہیں۔ وہ آپ وہی جانتے ہیں جو ہم  
 میں پڑا تھا۔ کیا آپ اس ملک کو ایک  
 مار بھر بانٹنے کی سازش کر رہے ہیں  
 کیا آپ اس ملک کی اقلیت کو اس  
 بات کیلئے مجبور کر رہے ہیں کہ  
 وہ بٹے بٹے تارخ میں تیار کیا کر لیں  
 سو جائے۔ اور سر علقم کو پیاداب اور  
 کشید سارے لیا جاتے ہیں۔

میڈم مسادات کی شدت  
 کنوں بدلا ہوئی ہے۔ یہ ایک بڑا  
 اہم سوال ہے۔ کیا یہاں آڈیو کیسٹ

وڈیو کیسٹ کی بات ہو رہی تھی۔  
 مجھے لگتا ہے کہ پہلے فرقہ پرستی کا سفر  
 فرقہ پرستوں کے ہوا تھا اور اب نیا سفر  
 شروع ہو گیا ہے۔ وہ سوشلزم سے شروع  
 ہوا تھا۔ قدرت کی حالت ہے کہ کسی  
 مہینہ مہینہ اس پر ترجمہ نہیں فرمائی۔  
 سابق وزیر اعظم ہزارہی ڈیپارٹمنٹ نے  
 ایک اخبار کو اسٹروایڈ دیتے ہوئے کہا  
 ہمیں نہیں کہنا کہ میں نے آڈیو کی گو  
 رتھ یا تارخ لکھنے کی سوشلزم سے شریک  
 مندرجہ کے طور کی منتقلی سے اجازت  
 نہیں دی تھی۔ اسلئے پھر تم یا تارخ لکھنا  
 مندرجہ کے باوجود شروع ہوئی تھی۔ میں  
 نے یہ بھی کہہ دیا تھا کہ سوشلزم مندرجہ کا  
 گوگ انجیلانی آڈیو کی صدا سے لگے  
 میں پورے ڈالے۔ اس لئے کہ بری  
 الیسا لگایا تو اس فرقہ پرستوں کی بھی  
 سسٹیم سے حاصل ہو جائے گی۔ "یہ بھی  
 اہم بات ہے نوٹ کرنے کی۔ گوگ اس  
 فرقہ پرستوں کو سوشلزم مندرجہ کا اشتہار  
 حاصل نہیں تھا۔ انہوں نے یہ بھی کہا کہ  
 "میری شہر میں میں آتا کہ یہ مسجد  
 ڈھونڈنے چاہئے ہیں۔ ہمارے بیاں تو  
 سوشلزم مندرجہ کے اعلیٰ میں تھے اندر  
 ایک مسجد ہے اور وہیں وقف کی کچھ  
 زمین بھی موجود ہے۔ وہاں وقف  
 پر موقوف بنایا آزاں دیتے ہیں۔  
 ہم وقف پر گھنٹہ بھر لے رہے ہیں۔ ہمارا  
 کھی فکڑا نہیں ہوا۔" سندھ آئی جائیے  
 ان لوگوں کو جو مندرجہ مسجد کے نام پر  
 اس ملک کے ایک اقلیت کو ڈیپارٹمنٹ  
 کرنا جانتے ہیں۔ (مداخلت)۔

ہم تانے کی ضرورت نہیں ہے۔ سارا ہڈی میں پورا ملک اچھی طرح سے جانتا ہے۔  
 میڈم۔ میں توجہ دلا رہی تھا کہ مسادات میں اتنی شدت کیوں پیدا ہوئی۔ میڈم مسادات پہلے بھی ہوتے تھے اور مسادات آج بھی ہوتے ہیں۔ ہم لوگ اس کے عادی ہو گئے ہیں۔ لیکن جو شدت جو نفرت کا رہا اس مار چھلا ہے وہ اس سے پہلے ہالین بینا لیس سال میں کبھی نہیں بڑھا۔ بی۔ اے۔ بی۔ کا سوال آیا تھا۔ کل مباحثہ عناصر نے کہا کہ ہم نے بی۔ اے۔ بی۔ کو ڈنڈہ میں لہر رہے ہیں میں یہی پی۔ اے۔ بی۔ کی حمایت کرتے تھے کہ ان تیار ہوں۔ کہیں پی۔ اے۔ بی۔ جو کچھ کر رہی ہے۔ بی۔ اے۔ بی۔ نے جو کچھ کیا ہے کیا اس کے بعد کوئی بھی انسان کوئی اکالاف قوت، بی۔ اے۔ بی۔ کے ان کارناموں کی کوئی معجزہ ہو کر وکالت کر سکتا ہے۔ کہیں ہمارے اس محسوس کے ایک مسعود مجبور ہیں۔ یہ تو دسمبر کے باج جنیم کے اندر ایک بورڈ جمع ہے۔ آر۔ ایس۔ ایس۔ کا ترجمہ ہے یہ اخبار اس نے لکھا ہے کہ راجیو گاندھی کے خیر جناب ج۔ کے۔ میں صاحب نے بی۔ اے۔ بی۔ کے ۲۰ کانڈروں کو رجسٹرڈ نیسیٹ بھیج دی اور انہی ایک ایس۔ جی۔ بھیج دی جس میں انہوں نے لکھا ہے کہ غالباً جس صاحب نے دماغ رکھی ایکٹ کرنے کی ضرورت

ہیں ہے۔ ہو سکتا ہے اور اگر یہ غلط ہو تو آپ ضرور دیکھائی کیجئے گا۔ لیکن یہ آر۔ ایس۔ ایس۔ کے ایک اخبار میں جمع ہے۔ میں شاید جانتا ہوں اس بارڈس کو کہ.... (مداخلت) ڈاکٹر حنیفہ کارمین: میرا نام تکریمات کی جارہی ہے۔ اب سمجھائی: (انگلش) ڈاکٹر حنیفہ کارمین: (انگلش) شری محمد افضل عرف م۔ افضل: پری مات سے لیجئے۔ اسمیں یہ کہا گیا ہے کہ افعالستان اور سری نکا سے کچھ ڈسٹ اگر مدد ستالی مسلحانوں کے گھر بھیج گئے ہیں۔ اور مساد کرنا چاہتے ہیں.... "مداخلت" اب سمجھائی: (انگلش) ڈاکٹر حنیفہ کارمین: (انگلش) ڈاکٹر رتاکر مارڈے: (ہندی) شری محمد افضل عرف م۔ افضل: کہہ دیجئے انہوں نے ڈیٹائی کر دیا ہے تو میں میں عناصر سے رجوع است کروں گا کہ چونکہ یہ آر۔ ایس۔ ایس۔ کا ترجمان اخبار ہے اندر جمع ہے۔ اس لئے اٹلواپا ڈیٹائل اس اخبار کو بھیج جائے گا۔ اب سمجھائی: (ہندی) ڈاکٹر حنیفہ کارمین: (ہندی) شری ایس۔ ایس۔ آملوالیم: (ہندی) اب سمجھائی: (ہندی) شری محمد افضل عرف م۔ افضل: میڈم ایس۔ شری صاحب کی سند ہے آئروور میں آئل بورڈ جمع ہے۔

دلچسپ تو اس وقت ہندوستان میں ہے۔  
اخبار بہت ساری خبریں دیکھ رہے ہیں۔  
اگرٹر صفیں تو دل ڈرتا ہے کہ آج بپتہ  
میں کوئی خبر بھی ہوگی۔ اسمیں انہوں  
نے آئینہ کے آئینہ ایم۔ ایل۔ اے۔ کو  
کوٹ کیا ہے جس میں انہوں نے کہا ہے  
کہ "ہمیں گاؤں گاؤں میں مسلمانوں  
کو دیکھنا ہے۔"

خولہ لگتے رہے ہیں وہ تارے  
کی ضرورت ہیں۔ ایک بڑا دلچسپ  
لہرہ ہے کہ "مسلمانوں کیلئے پاکستان  
یا قبرستان"۔ پاکستان تو سم جانے  
والے ہیں ہیں اور خاص طور پر جو  
مٹی جنریشن ہے۔ اسکے بارے میں  
آج کو بتا دوں کہ ہم پاکستان  
سارے کے ذمہ دار ہیں اور نہ اسکی  
سزا بھگتے کہ لے لیا ہے۔ ہم ماسر  
نے جو کچھ کیا تھا اس کے ذمہ دار ہیں  
نہ اسکی سزا بھگتے کہ لے لیا ہے۔  
ہم آزاد ہندوستان میں پیدا ہوئے  
ہیں اور ماسر کے قانون سے یا کسی اور  
راجہ کے قانون سے گورن ہیں ہوتے  
ہیں بلکہ اس ملک آزاد۔ سیکولر  
ڈیموکریٹک آئن کے گورن ہوتے ہیں  
وہ قانون جو کہ ہم کرنے کے لئے تیار  
ہیں۔ میں اپنا لوٹنٹ آف وریو  
رکھنا چاہتا ہوں کہ اس دہش کے  
ساننے جو لوگ ہندو فرقہ پرستی کو  
محامی دیتے ہیں اس کے ساتھ دہش کے  
طور پر مسلم فرقہ پرستی کا بھی نام لیتے  
ہیں۔ جب وہ مسجد کی مات کھرتے ہیں  
تو مذہب کی مات کھرتے ہیں تو وہ منافق  
کو بھی ایک طرح سے گاتی دیتے ہیں

کہ یہ مسجد کی بولڈنکس کر رہے ہیں یہ  
سب غلط فہمی ہے۔  
میں اب کوٹنا چاہتا ہوں کہ میں  
ماہر کی آئینہ گہنی کا مدنیہ ہیں یوں۔  
اور نہ اسکا مدنیہ بنا چاہتا ہوں۔  
ایک آزاد ہندوستانی کی حیثیت سے  
ایک مرلہٹ کی حیثیت سے ایک  
مندر آف بارلیسٹ کی حیثیت سے اگر  
سچائی اس میں ہے تو اسے ساتھ ہوں۔  
مجھے آئینہ گہنی میں حلنے کی ضرورت  
ہیں ہے۔ میں یہ کہتا ہوں کہ اس ملک  
میں ہندو اور مسلمان بڑے اور چھوٹے  
مجال کی طرح ہیں۔ حق پر اور دھوکا  
میں بھی ہوتا ہے گھر میں دیوار بھی لپیٹ  
جاتی ہے۔ ایک دیوار آج بھی لپیٹ  
لین اس حق پرے کو بڑھاتا ہے ایک نئی  
دیوار کھڑی کرنے کی کوشش نہ  
کرتے ہیں۔ میں کہتا ہوں ہندوستان کا  
کوئی مسلمان رام کے خلاف نہیں ہے۔  
رام مذہب کے خلاف نہیں ہے۔ کیوں  
ہیں یہ یہ بھی نہیں لیتے۔ مذہب ہمارا  
کیا لپٹا ہے اس سلسلہ میں کسی بھی  
مذہب کے پیروں کو کسی بھی مذہب  
کی باغی تہخصت کو بڑا کرنا اسلام  
میں میرا شک نہیں ہے اور نہ ہی  
ہم کوئی نہیں کرتے۔ ہم رام کی اتنی ہی  
عزت کرتے ہیں جتنی کہ ہم کی کرتے ہیں۔  
مندن موافق ہے۔ میں یہ بھی کہتا ہوں  
کہ ہمیں یہ پورے سماج کی حق نہیں ہے کہ  
رام پیدا ہوئے تھے یا رام کا شک  
تھی یا نہیں۔ یہ اب کا بلیف ہے  
ہماری آنکھوں پر سیر نہیں ہے۔ ہم  
آج کے بلیف کی قدر کرتے ہیں یہ ہم

آپ کے بیف کی عزت کرتے ہیں۔  
مگر آپ کی آستھا کو سلام کرتے ہیں۔  
خسکار کرتے ہیں۔ لیکن جب آپ کی  
آستھا کی کوہ پٹری آستھا سے ٹکرائے  
گی تو اس ملک میں کوئی تو فیصلہ کر دے  
گا۔ کون ہے وہ فیصلہ کرنے والا۔

مینبر آپ بیٹھے ہیں بات کرتے ہیں  
تاریخ کو کار بیٹوں کے اعلان کرتے ہیں  
اور جب بات جیت کا ماحول بننے  
لگتا ہے۔ تو تاریخ کو ملنگھو میں  
لے کر آدیتے ہیں اور اس کے بعد  
ملنگھو ماحول کو تباہ اور برباد کر دیتے  
ہیں۔ یہ وہ ملیٹیٹ سیکشن ہے جو  
ہندو برلڈ کا جس نے اس ملک میں  
خسار و خسارت شروع کر رکھے۔ تاریخ  
سے تامل و شوہندو برلڈ اور باہری  
ایکشن کمیٹی کے درمیان گفتگو ہو رہی  
ہے وہ کام ہو جائے۔ اس کے بعد اس کے  
کاغذاتوں کا آدان پزدان ہوا۔ میں  
اور کچھ سن رہا تھا ہوں معزز ہوم  
منسٹر صاحب بیان کرتے ہیں۔ یہ اس  
بات کے گواہ ہیں ان کی باتیں اس  
بات کی گواہ ہیں۔ اور ان کی باتیں  
بات کی گواہ ہیں یا ہوں ان کا  
اس بات کی گواہی دے گا اور بتائے گا۔  
کہ کون جائز ہے اور کون ناجائز ہے۔  
میں نے پورا کوآپریشن دیا ہے ملک  
جب ہم سے اخبار والوں نے پوچھا کہ  
باہری ممبر ایکشن کمیٹی آپ کے گائیڈان  
دے دے دے ہیں اور اپنا کام کرتے ہیں  
کر دیلے اور وہ شوہندو برلڈ کے

نے اپنے کاغذات میں آپ کو گائیڈان  
دیا ہے۔ تو ہم نے یہی جواب دیا کہ  
اس کا فیصلہ دس تاریخ کو کریں گے  
جب بات جیت کی مینبر بیٹھے تھے۔

لیکن یہ شوہندو برلڈ وہ ہے جس کے  
چیف منسٹر میں بھیروں کی شکل و شہادت  
صاحب۔ مندر یاد صاحب اور ملائم  
سنگھ یادو صاحب اور بیاں سردھو

گانت سہائے صاحب ہوم منسٹر  
ہوئے ہیں جو چاروں حضرات آپ برلڈ  
میں ان لوگوں کے بغیر جو ان لوگوں  
کو بغیر کو نفیڈ لیس ہیں لے رہے ہیں

اعلان کر دیا کہ ہم نے باہری ممبر کے  
کاغذات کو رجسٹر کر دیا ہے۔ وہ  
وہ ہے کہ وہ تو سب لیگل کاغذات  
ہیں۔ منسٹر لیگل کوئی پروٹسٹ نہیں ہے۔

میں آپ سے پوچھنا چاہتا ہوں کہ ۱۸۸۹  
کے اندر اگر کسی کورٹ نے کوئی فیصلہ  
دیا ہے تو اس فیصلے پر عمل بھی ہوا  
ہے یا تو کیا اسکی طرف لیگل جٹ

ہے کیا اسکی کو منسٹر لیگل امپورٹینس  
میں ہے۔ آپ فرماتے ہیں کہ اسکی  
کوئی منسٹر لیگل امپورٹینس نہیں ہے۔

جو کتابیں ہو گئی شاید وہ منسٹر لیگل  
امپورٹینٹ ہو گئی۔ یہ وہ ہے وہ  
فریقین سما۔ میں اس سب کے فیصلے  
موال کرنا چاہتا ہوں کہ آستھا کی ہم عزت

کر سکتے ہیں لیکن ہم وہ صاحب کیلئے  
عزت کر سکتے ہیں۔ وہ صاحب کا جو ماحول  
پیدا ہوا ہے کیا اس سے لڑا جا سکتا ہے



تھا۔ سیمٹرل سٹیشن پر لکھاڑا تھا کہ  
دیکھئے۔ اور سب بالوں کو چھوڑنے سے اس  
محرر پارلیمنٹ میں کا اسٹانڈ، دیکھ  
لیکھئے اور تمہارے کہ کتنے مسلمانوں کو آپ  
لے رکھا ہے۔

ہم کو معاشی طور پر مسادات لہر کے  
تھا لیا جارہا ہے۔ سرکاری طور پر ایئر لائنز  
میں بٹھے ہوئے لوگ ہم سے آگے رہتے  
ہیں۔ ہمارا سیروینٹر میں رکھاڑا گیا ہے  
اور الکاحیال ہے کہ مسلمانوں کے ساتھ  
ایئر مینٹ کیا جارہا ہے۔ بھائی کس  
ایئر مینٹ کی بات کر رہے ہیں آپ۔  
کہا آپ اس ایئر مینٹ کی بات کر رہے  
ہیں کہ ہر ائیلین تیس سے پچھلے اردو  
کا لہر لگا دیا جائے گا۔ ہر ائیلین  
سے پہلے یہ کہہ دیا کہ سب مسلمانوں  
کو ہم برابری سے ریزیشن دینگے۔  
مجھے شغایت ساری پارٹیوں کے ہے  
صاف لکھ دیا۔ اپنی پارٹی سے بھی ہے  
اور اس کاؤس کے اندر کھڑے ہو کر  
میں نے یہ کہہ دیا کہ اور جب تک زبان  
ہے کھتا رہوں گا۔

میں آپ سے آگے بات کہنا چاہتا  
ہوں کہ ایئر مینٹ کا تو آکھڑا کر کے  
عام آدمی اس دیش کے ۷۰ فیصد  
ہندو اور مسلمان بڑھے کتے میں ہیں  
مک ملنے میں ان کے دل میں نفرت پیدا  
کی جارہی ہے لیکن اس نفرت کا نتیجہ  
کیا نکلتا ہے۔ میں صرف آپ سے یہ پوچھنا  
چاہتا ہوں۔ میرا خیال یہ ہے کہ اس  
نتیجہ آہستہ آہستہ ظاہر ہونے لگا ہے

مجھے اطلاع ملی ہے کہ کہیں کسی ایک  
مسافر میں کچھ مسلمان لڑکوں نے پولیس  
کے لوگوں پر حملہ کر دیا۔ مجھے نہیں معلوم  
کہ یہ حقیقت ہے یا غلط ہے۔ مگر مٹری  
ہی یہاں پہنچے ہیں آلوینہ ہوگا۔ میں آپ  
سے یہ کہنا چاہتا ہوں کہ ایسا کیوں ہوا۔  
میں اس حملہ کی کسی بھی حالت میں بھی  
میں نہ بھی جاؤں گا تب بھی۔ حمایت  
ہیں کر دے گا لیکن یہ ضرور پوچھنا چاہتا ہوں کہ  
آپ کسی کو مارتے ہیں گے تو کس تک  
وہ برداشت کر لیا۔ کس تک وہ سستا  
رہے گا۔

مہاش صاحب پیسہ کا حساب رکھتے  
ہیں۔ وہ بتا رہے تھے کہ ہم تو سرور کا حساب  
رکھتے ہیں۔ مہاش صاحب اہل بیابان لڑتے  
ہیں۔ رکھتے ہیں اس سے پوچھنا چاہتا  
ہوں کہ وہ لاشوں کا حساب کیوں نہیں رکھتے  
ہمارے لئے۔ جس صاحب اس  
پارٹی کے مندر بہتر ہیں۔ میں شروع  
میں اہل باتوں سے ٹرامنا شروع ہوا اور مجھے  
لگا کہ اسے اندر جہ سے ہندو مسلمان اکٹھا  
کوڑھانے کا کہیں باغی تھی سے آرہے۔  
ایس کے آرہے ہیں یہ ... (مداخلت)

ڈاکٹر جے۔ کے۔ جس: (الغش)  
شری محمد افضل عرف م۔ افضل:  
مسٹر جس۔ آئی وائٹ یور ہیلپ۔ آئی  
ریٹلی وائٹ رور ہیلپ۔

میں آپ سے کہتا ہوں کہ آپ نے ایک کسٹ  
تالی ہے۔ وہ کسٹ میں دے بھی دیکھا ہے  
آپ یقیناً جانتے ہیں میرے اس میں  
دو بھائیوں کی لاشیں دیکھیں تو سراخوں  
کھول دیتا۔ اور میرے سگنے اس

ملک میں ۱۹۷۷ء کے بعد کی تبدیلیوں -  
نہاروں لاشوں گھوم گئیں جن کا پی۔ای  
سی۔ نے یہ قہر کیا ہے۔ لیکن میں پوچھتا  
چاہتا ہوں کہ آپ نے الودھیا کی لاشوں  
کے کسٹ بنائے اور آٹو کر سنی میں  
کنورٹ کر دیا۔ اگر آپ اس ملک کے  
لئے واقعی وفادار ہیں تو آپ علیحدگی  
کی لاشوں کے کسٹ بنائیے آپ فوراً  
کی لاشوں کے کسٹ بنائیے آپ ملیانہ  
کی کسٹ بنائیے۔۔۔ (مداخلت)۔۔۔

ڈاکٹر جنید زکریا رحیم: (الگوش)  
دی ڈیپٹی چیئرمین: (الگوش)  
ڈاکٹر جنید زکریا رحیم: (الگوش)

اب سمعانی: (ہندی)  
ڈاکٹر زکریا رحیم: (ہندی)  
دی ڈیپٹی چیئرمین: (الگوش)  
ڈاکٹر جنید زکریا رحیم: (الگوش)  
دی ڈیپٹی چیئرمین: (الگوش)  
ڈاکٹر جنید زکریا رحیم: (الگوش)  
دی ڈیپٹی چیئرمین: (الگوش)

شہری محمد افضل عرب م۔ افضل:  
مہودیم میں الکا شتر گزار ہوں۔ ملیانہ  
کمالیسیٹ انہوں نے اسلئے بنا تھا کہ وہ  
اسوقت کانگریس کی سرکار تھی اور  
الودھیا کالسیٹ انہوں نے اسلئے بنانا  
کہ ان کی وی۔ پی۔ سنگھ کے ساتھ ٹھن گئی  
(مداخلت)

دی ڈیپٹی چیئرمین: (الگوش)  
شہری محمد افضل عرب م۔ افضل:

میں کنگھوڈ کر رہی ہوں۔ مہودیم۔ جہاں  
میں ایک طرف مشا دات ملے دھرم  
میر لشیڈ کی اور اشارہ کر رہی ہوں وہیں

اس کے لئے حکومت کو بھی برابر کا دم  
دار ماننا ہوں۔ میں آپ سے ایک  
بات عرض کرنا چاہتا ہوں کہ حکومت کا  
کام لوگوں کو سکورٹی دینا ہے کسی نے کل  
مذاق میں کہا کہ مہودہ کانت جی بیلے بھی  
تھے اور آج بھی ہیں میں یہ بات سمجھ سکتا  
ہوں اور مجھے پورا یقین ہے کہ اگر مہودہ  
کانت جی جیسے منسٹر دم دار رہے کام  
کریں تو شاید کچھ مسائل حل ہو سکتے ہیں میں  
نے انہوں سے بات کیلئے کو متش کرتے ہوئے  
دیکھا ہے حالانکہ یہ الگ بات ہے کہ یہ  
ان کو خشتوں میں ناکام ہوئے ہیں۔ جب  
علیحدگی میں ڈلگا ہوا تو میں ان کے گھر گیا  
اور میں نے ان کے گھر پر ہی دھڑا دیا یہ  
مجھے محبت سے اٹھا کر لے گئے۔ میرے  
سلسلے میں انہوں نے جو کچھ بھی لیا۔ پی۔ سرکار  
کو کہہ سکتے تھے کہ اور جو کچھ انتظام  
فورس میں چھنے کے لئے کر سکتے تھے  
انہوں نے کتاب میں الکا شتر گزار ہوں۔  
لیکن میں اس بات کا گواہ ہوں میں نے  
اکٹی بے کسی اپنی آنکھوں سے دیکھی ہے۔  
جب اس ملک کا وزیر اعظم اور وزیر خلیفہ  
میں فرقہ وارانہ وارداتیں پھیلنے والوں  
کے آگے بے لسی محسوس کرنے لگیں تو  
ذرا مجھے بتائیے کہ وہ لوگ من کے ساتھ  
ظلم ہو رہے ہیں وہ کیا کریں گے۔ وہ  
لوگ ملے ہاتھ سے توڑتے تھے پھر  
ان کے اندر لے ڈاری پڑھی۔ میں آپ  
لے نوید کرنا چاہتا ہوں اس بات کو  
وزیر داخلہ خاص طور سے نوٹ کریں۔  
کہ ان کے اندر لغات کا خیمہ بڑا  
ہو۔ مجھے۔ وزیر اعظم صاحب جوتیان

موجود ہیں جنہیں دلچسپی نہیں ہے  
 شاید اس مسئلے پر انکی تین دن سے  
 ممانات کی جبری نگہ بولی ہے۔ ایسا  
 نکتہ ہے جسے پنجاب کا مسئلہ حل  
 کر لیا گیا ہے۔ چیراغ خان نے انہ صبرے والی  
 بات ہے۔ پنجاب کا مسئلہ حل کرنے  
 کیلئے ممانات دے رہے ہیں۔ چیراغ  
 خان نے نہ جانے کتنے کنفیوٹیشن۔ نہ جانے کتنے  
 پنجاب بلبلہ رہے ہیں۔ انہیں اس بات  
 کا پتہ نہیں ہے کہ جب یہ بھین بھیل کر  
 کھڑے ہو جائیں گے تب دستاویز اس  
 طرف بھاگے گئیں۔ وزیر داخلہ صاحب  
 بیان موجود ہیں میں سمجھتا ہوں کہ اس  
 محفل پر ڈس کے اندر وہ بیان دیں  
 کیونکہ مسئلہ بہت بڑا ہے۔ باہری مسجد  
 اور رام حرم مسجد کے مسئلے سے میں  
 کسی کی آستھا کے خلاف نہیں ہوں لیکن  
 وزیر داخلہ کو یہ بات بتانی ہوگی کہ  
 اس ملک میں غند چلے گی یا آستھا چلے  
 گی غند چلے گی یا قانون چلے گا۔ غند چلے  
 گی یا انصاف چلے گا۔ وہ مجھ  
 بتائیں کہ باہری مسجد کو توڑ کر ممبر بنانے  
 کی اجازت دی جائے یا نہیں۔ وہ اس  
 بار میں میں بیان دیں اسلئے کہ جب  
 اس ملک کا وزیر اعظم شیخ رشید نے  
 دو سو سے دن ایک فرقہ پرست پارٹی  
 کے صدر کے گھر ملنے کیلئے جاتا ہے  
 سلام کرنے کیلئے جاتا ہے تو مجھے اس  
 وزیر اعظم کی سوشلسٹ حقوی و عوامی  
 وادی حقوی علم ہوتی نظر آتی ہے۔  
 لوگوں کا کالیفولکس اس میں اتھم ہو

جاتا ہے۔ میں آپ سے کہنا چاہتا ہوں  
 اگر ووٹ کی سیاست میں ۸۸ سٹیٹ  
 کے دم پر ممانات پر کوئی شخص اپنے آئے  
 کسی کو جھگڑا سکتا ہے تو آپ سمجھ لیں  
 اس ملک میں جاہلے گلوں کی پارلیمنٹ کے  
 اندر کمی ہو لیکن باہر کوئی کمی نہیں ہے۔ اگر  
 جھگڑا شروع ہو گیا تو اس ملک  
 کیلئے ایک نقصان دہ ہو گا۔  
 میں آخر میں کہنا چاہتا ہوں خاص طور  
 پر ان عقائد سے جو ہندوستان کے  
 مسلمانوں کو مجرب نکال۔ بالکل ان اور قبرستان  
 دکھانا چاہتے ہیں میں انکو کہنا چاہتا ہوں  
 کہ ہم نہ بالکل ان حاسن کے نہ قبرستان حاسن  
 کے اگر آپ نے ہمیں کروڑ مسلمانوں کو  
 قبرستان بھیجے گی کوشتش کی تو دو دو گز  
 سن جاہلے اور اس کے لئے ایک نیا بالکل  
 دیا جائے گا اسے قبرستان کیلئے اس بات  
 کو آپ سمجھ لیں۔ اسلئے بہتر یہ ہے کہ  
 حوالہ جاریہ کے ماحول پیدا کرنے کیلئے میں  
 آپ سے درخواست کرتا ہوں۔ مجھ کو حوالہ  
 لوید کرتا ہوں کہ اس کو درست سمجھ لیں  
 میں اس ملک کی عقل کیلئے کہہ رہا ہوں  
 لغت کا ماحول غم کیلئے۔ دوستی میں جو  
 ماحول ہے وہ دشمنی میں نہیں ہے۔ اس  
 سے ملک کا نقصان ہو گا۔ اس ملک  
 کے مددوں کا یا مسلمانوں کا نقصان نہیں  
 ہو گا۔ اگر اس ملک میں ہندو نہ رہے گا۔  
 یا اس ملک میں مسلمان نہ رہے گا تو اس ملک  
 کا نقصان ہو گا اور اتنا صاحب نقصان  
 ہو گا کہ جو نہ آپ سے اٹھایا جائے گا اور نہ  
 کسی اور سے... (مداخلت)۔

شری گیدیش نارائن سارنگ: آپ  
دھمکی دیتے تھے۔ (مداخلت)  
شری محمد افضل عرف م۔ افضل:  
میں دھمکی نہیں دے رہا ہوں۔ میں خاص  
طو سے نئی جنریشن کی طرف دھیان دلاؤں  
"مداخلت" میرا دھمکی دینے کا اسٹائل  
کبھی نہیں رہا ہے۔ آپ اٹھا کر دیکھ لیجئے  
چار سال کی تاریخ کا ریکارڈ ہماری کمیونٹی  
میں سے کس نے بھی دھمکی دی اس کا کیا  
حشر ہوا آپ دیکھ لیجئے۔ آج اسکو عوام  
نہیں پوچھتا۔

پروفیسر سیوریندر بھٹا جارج: (الکٹری)  
شری محمد افضل عرف م۔ افضل:  
جس شخص نے دھمکی دی اسکا حشر  
آپ کے سامنے ہے۔

ہم دھمکی دینے والے لوگ نہیں ہیں۔  
لیکن آپ یہ نہ سمجھئے کہ ہم بے حد نرم و  
لوگ ہیں۔

شری جگدیش پرساد مہقر: (ہندی)

اب سمجھاؤ: (ہندی)

شری جگدیش پرساد مہقر: (ہندی)

شری محمد افضل عرف م۔ افضل:

میں قبرستان کیلئے گاہے گاہے ہوں۔

(مداخلت)۔

شری جگدیش پرساد مہقر: (ہندی)

شری محمد افضل عرف م۔ افضل:

آپ اتنے خوف زدہ کیوں ہو۔ میری

سمجھ میں نہیں آتا کہ اس ملک کے اندر

لامشور کے ڈھیر لگتے ہوئے آپ خوف

زدہ ہیں ہوتے ہیں میرے بولنے سے

آپ خوف زدہ ہو گئے۔ (مداخلت)۔

شری جگدیش پرساد مہقر: (ہندی)

شری محمد افضل عرف م۔ افضل: میں  
اس پاکستان کو بھی غلط سمجھتا ہوں  
اور اس پاکستان کو بھی غلط سمجھتا ہوں  
یہ بات میں آپ سے کہہ رہا ہوں۔ لیکن  
آپ لوگوں کو مجھ پر مت کر بیٹے۔

شری جگدیش پرساد مہقر: (ہندی)

شری جیدرکار: میں: (ہندی)

شری محمد افضل عرف م۔ افضل:

ہماری کوئی مجبوری نہیں ہے مجبوری آپ

کی ہے۔ سیاسی مجبوری ہے۔ ووٹ کی

مجبوری ہے۔

دی ڈی پی جی میں: (الکٹری)

شری جگدیش پرساد مہقر: (ہندی)

شری محمد افضل عرف م۔ افضل:

میں چھپا ہوا ہے۔

شری جگدیش پرساد مہقر: (ہندی)

شری محمد افضل عرف م۔ افضل:

نے کہہ دیا ہے۔

اب سمجھاؤ: (ہندی)

شری محمد افضل عرف م۔ افضل:

اگر اس ملک کے مسلمانوں کو کوئی شخص

تہرستان بھیجا جاتا ہے تو ہمارا ہی آئین

ہوگا۔ اسکو سمجھ لیجئے۔ آپ سدن

کے اھو و بہت اچھے تقریریں کرتے ہیں۔

ابرار صاحب نے صحیح کہا کہ آپ لوگ

سدن میں بہت اچھے تقریریں کرتے ہیں

نہیں کیا سدن میں وہی تقریریں کرتے ہیں

دور محو کے سحر کر رہے تھے۔

ڈاکٹر حنیف کارمن: (ہندی)

شری محمد افضل عرف م۔ افضل:

بالکل نہیں کرتے تھے۔ جب آپ تقریر

کرتے تھے تو میں اس کو سخت محسوس کرتا اور نوٹ

کر دے گا۔۔۔ (مداخلت)  
 دی ڈپٹی چیئرمین (اعلیٰ)  
 شری محمد افضل عرف م۔ افضل  
 میں حکومت سے اس بات کا مطالبہ کرتا  
 ہوں کہ راجپوتوں کو اس ملک کے عوام کو  
 بدعنوان کو سزا دی جائے۔ وہ پورا بدعنوان  
 دے اور اس ملک کے لوگوں کے لئے  
 کو شش کرے اور اس ملک کے  
 میں شری ہے تو حکومت کو سزا دینا چاہیے  
 کہ کوئی لوگ جلد سے اور کوئی واقعی نہ  
 مہیا کیا جاتا ہے۔ آپ اس کے مطابق  
 قانون کو دیکھئے۔ میں مسلسل منتظر  
 ہوں۔ اگر وہ صاحب نے ایک بیان دیا  
 اور وہ اخباروں میں بھی چھپا کہ اس ملک  
 کے مسلمانوں کو پولیس میں بچا سکتی ہے  
 اسٹیٹ میں بچا سکتی ہے اور انہیں بچا سکتے  
 ہیں تو ہم بدعنوان بچا سکتے ہیں کیا مطلب  
 ہے اس بات کا۔ کیا آپ کو ان کی ٹوشن  
 کے خلاف بات نہیں کر رہے ہیں۔۔۔  
 (مداخلت)۔۔۔

THE DEPUTY CHAIRMAN. Now it is over. The House is going to be adjourned.

شری محمد افضل عرف م۔ افضل  
 کیا کوئی اس ملک میں اس بات کا نوٹس  
 لینے والا ہے۔ کسی نے کیا ایسے اوپر نوٹس  
 کا مقدمہ دائر کیا۔ کیا ہم سب کو  
 کوئی ایکشن لینا ہے اگر کہہ دے۔  
 جن صاحب آپ کے ساتھ ہوئے وہ گوم  
 رہے۔ وہ آپ کو نہیں بچا سکتا۔ اس  
 میں اتنی طاقت نہیں ہے۔ اس ملک  
 کی حکومت آپ کو نہیں بچا سکتی۔ بچا سکتے  
 ہیں تو ہم بچا سکتے ہیں تو میں کیا ہم کر رہے  
 ہوں۔ لیکن اگر کسی پارٹی کو ملے کہ کوئی  
 جرم کرتا ہے تو نہ تو ہم سب سے ہیں۔

THE DEPUTY CHAIRMAN: The House is adjourned and we will meet again at 2 30 p.m.

The House then adjourned for lunch at thirty-three minutes past one of the clock

The House reassembled after lunch at thirty-three minutes past two of the clock, [The Vice-Chairman (Shri M A Baby in the Chair).]

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI M A BABY). Before we resume the discussion I would like to make an announcement that at quarter to three the Minister of External Affairs would make a statement on the issue raised earlier in this House regarding the visit of the Foreign Minister of Iraq to India. Yes, Shrimati Renuka Chowdhury to resume discussion.

SHRI JAGESH DESAI (Maharashtra). I must compliment the Minister. He is very prompt.

CALLING ATTENTION TO A MATTER OF URGENT PUBLIC IMPORTANCE—COMMUNAL SITUATION IN THE COUNTRY—(Contd.)

SHRIMATI RENUKA CHOWDHURY (Andhra Pradesh). This debate is going on in the Parliament since yesterday and we are witnessing yet another reduction of reality into statistics. The matter that this country has been seized with is a failure of nation-building. Why is it

that time and again we come back to Parliament to discuss the merits of secularism? Secularism is not a god which we are to deify or worship. Secularism is a way of life, it is the spirit in which we all live together collectively and singly in this social fabric, and I feel, it is really pretentious that we sit here today and start speaking on an ode to secularism. The absolute failure that the nation is seized with is nation-building. Why is it that after 47 years of independence we are standing up and talking on a subject like this? This is something